पांगी क्षेत्र (चम्बा) में बजने वाली लोक तालें

जीवन सिंह
विद्यावाचस्पति शोधार्थी, संगीत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

भारतवर्ष एक बहुत बड़ा देश है। उतर में हिमालय की उतुंग चोटियों से लेकर दक्षिण में गंभीर जलधि को स्पर्श करने वाली कन्याकुमारी तक, पूर्व में शस्य श्यामलम असाम, बंगलादेश से लेकर पश्चिम में धूं–धूं करती हुई मरूभूमि तक हमारा देश विस्तृत है। आवागमन के साधन अधिक पुराने नहीं है। चलचित्रों में आए दिन बजने वाले गीत जो देशव्यापी परम्परा लोक संगीत का क्रमशः सर्वनाश कर रहे हैं। इनका इतिहास बहुत पुराना नहीं है। अपने सीमित क्षेत्रीय व प्रांतीय दायरों में जिन मौलिक कलाकृतियों का सृजन व संरक्षण लोक संगीत के नाम पर शताब्दियों से होता रहा है। आज इनका इतिहास दयनीय स्थिति में घात–प्रतिघात से, चाहे ये शास्त्रीय प्रयास हो या अशास्त्रीय संस्कृति के विकास को बांध कर नहीं रखा जा सकता। शताब्दियों से लोकसंगीत परम्परा में सैंकड़ों कलाकार हुए। तत्कालीन समाज उन्हें उत्तम, मध्यम, अधम आदि श्रेणियों में परखकर उचित स्थानों पर आसीन करता है।

लोकसंगीत समाज के छोटे–छोटे वर्गों के दैनन्दिन गतिविधियों का, उनके हर्ष और विषाद का चित्रण करता है। उन गीतों में विविधता का आभाव भले ही हो किन्तु मौलिकता का अभाव कभी नहीं होता। परिणामस्वरूप एक निर्दिष्ट काल में जिन लोक गीतों की रचना हुई, समाज में कुछ वर्षों तक धूम मची रहीं। तदुपरान्त केवल मौलिक तत्व अगली पीढ़ी के लिए बचे रहे और सामयिक बातें समाप्त हो गयी। अगली पीढ़ी ने इन मौलिक को सर–आंखों पर लिया व अपनी प्रतिभा से उस सम्पदा की और भी अधिक अभिवृद समृद्ध किया। दुःख है कि राजनैतिक झझबातों में इस देश की महान सांस्कृतिक परम्परा का आज अत्यंत विकृत, वीभत्स, भयावह रूप आ रहा है। जिन स्थायी भावों के आधार पर मानतत्व की आदिकाल से प्रतिष्ठा होती थी, आज की स्थिति उनकी पूर्ण उपेक्षा है। अस्त–व्यस्त, विश्रृंखलित लोकगीतों का लयात्मक परीक्षण कार उनकी प्रमाणिकता पर निर्णयात्मक रूप से कुछ कहना इसलिए कठिन हो जाता हैं यदि यह क्रम कुछ वर्षों तक चला तो लोक संगीत की अमृत धाराएं सूख जाएगी और तब जिस सांस्कृतिक शून्यता का अभिशाप समाज पर होगा। उसकी कल्पना करते हुए भय होगा।

भारत वर्ष अनेक प्रांतों में विभक्त होने के कारण हिमाचल प्रदेश भी भारतीय संस्कृति इतिहास में अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए है। यह प्रदेश अपने प्राकृतिक सौंदर्य के साथ लोक संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पर्वतीय श्रृंखलाओं से समृद्ध इस भूखण्ड में स्वरों के समान लयों के जटिल प्रयोग भी अछूते नहीं है। हिमाचल प्रदेश को 12 जिलों में बांटा गया है और प्रत्येक जिले की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएं भिन्न हैं। इन्हीं बारह जिलों में हिमाचल प्रदेश का सबसे सुन्दर जिला चम्बा है जो अपनी सांस्कृतिक पहचान के लिए जाना जाता है। यहां प्रत्येक क्षेत्र के गांव में साल भर मेले एवं त्यौहार होते रहते हैं जिनमें हमें इस जिलें की परम्पराएं दृष्टिगोचर होती है। इस जिले की विशेषताएं यहां के प्रत्येक क्षेत्र के लोक गीत, लोक वाद्य तथा लोक नृत्यों में उल्लेखनीय है।

जहां चम्बा जिले का पांगी क्षेत्र भी पारम्परिक लोक संस्कृति में पीछे नहीं है। लोक गीतों में घुरैई, सुगली, भ्यागेण गायन शैलियों के साथ अन्य विभिन्न प्रकार के संस्कारिक लोक गीत प्रचलित है। इन लोक गीतों के साथ बजने वाले ताल वाद्य की तालें जो शास्त्रीय तालों से काफी भिन्न है। जिन्हें क्षेत्रीय ताल कह कर पुकारा जाता है। इस क्षेत्र में प्राचीन मन्दिरों की संख्याओं में भी कमी नहीं है। प्रत्येक गांव में अपने–अपने कुलिष्ठ व देवी या देवता का मन्दिर है। जिनकी पूजा पारम्परिक रीति–रिवाजों से की जाती है। इन प्राचीन मन्दिरों की लोक कथाओं के दर्शन भी होतें हैं। जिनका संबंध किसी न किसी रूप में अध्यात्म से जुड़ा है। यहां इस क्षेत्र के स्थानीय कलाकारों द्वारा इन लोक गाथाओं को और समृद्ध बनाने के लिए स्वर व लय के साथ पंक्तिबद्ध लोक गीत की भान्ति एक नया रूप प्रदान किया गया है, जो अत्यंत सराहनीय कार्य है। मन्दिरों में अधिकतर लोक गीतों के साथ लोक तालों का ही वादन होता है। यह तालें शास्त्रीय तालों से भिन्न है, जिनके कारण इन्हें क्षेत्रीय तालों का रूप प्रदान किया गया है।

लोक गीत व देव स्थलों में प्रयुक्त तालों में केवल लय या भरी का प्रयोग होता है। जो शास्त्रीय तालों के समान काल या खाली का उचित स्थान पर सदैव निर्वाह करना लोक गायकों के लिए संभव नहीं है। यहां लोक संगीत में लयात्मकता का निर्वाह जिन वाद्यों से होता है उनमें बजने वाली तालों के लिए कलिष्ट शास्त्रीय नियमों का पालन नहीं किया जाता है। ऐसे ही लय वाद्य वादक जिन्हें न अक्षर ज्ञान है और न ही ताल के बोल कण्ठस्थ है। जैसे धा ना धीं तिरकिट सदृश बोलों की कल्पना करना उनमें नहीं है। किन्तु अपना वाद्य विविध लयों में अत्यंत श्रेष्ठ रीति से बजा लेते हैं। जैसे ताल, काल, खाली, भरी आदि शास्त्रीय परिभाषिक शब्द उनके लिए निर्थरक होते हैं व कभी–कभी उन्हें कला प्रदर्शन से शारीरिक कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। इन सब बातों पर ये प्रतिपादित नहीं होता कि लोक संगीत यहां के मन्दिरों में प्रचलित संगीत लयात्मकता के उचित निर्वाह का अभाव है।

जिस प्रकार विभिन्न लोक गीत, देव–स्तुति गीत, लोक नृत्य एवं पहाड़ी अध्यात्मिक गीत गाए जाते हैं। उसी प्रकार इस क्षेत्र में देव पूजा, मेलों, त्यौहारों व अन्य संस्कार उत्सवों पर विभिन्न प्रकार के लोक ताल बजाए जाते हैं। इन अवसरों पर परम्परागत तरीके से ढोल, नगारा, चाँबी ढोल आदि सामूहिक रूप से भिन्न–भिन्न तालों का वादन किया जाता है। इन वाद्यों के साथ संगत के लिए काहल, रणसिंगा, छंछाल, घंटा एवं बांसुरी का प्रयोग किया जाता है।

पांगी क्षेत्र में ताल वादन की अपनी एक अलग विशेषता है। वाद्यों पर तालों का वादन सामूहिक रूप में किया जाता है। गर्दन हिलाकर हाथ से संकेत के रूप ताल के सम पर वादक कलाकार के साथ मिलकर कलाकार की कला प्रदर्शन पर 'दाद' देते है। यह दूर्लभ ताल एक अमूल्य निधि है। जिन्हें कठिन पश्रिम करके ही एकत्र किया जा सकता है। यहां के लोक संगीत के अन्तर्गत लोक गीतों के साथ संस्कार मेलों त्यौहारों एवं मांगलिक कार्यों के अवसर पर प्रयुक्त होने वाली तालों का परिचय ताल लिपि सहित दिया जा रहा है।

धार्मिक एवं अन्य लोक गीत बजता है ढोल वाद्य पर यह ताल सीधा बजाया जाता है। ढोल वादक के साथ लय प्रदर्शन के लिए छोटी–छोटी बारीक लकड़ियों की छड़ी द्वारा वादन किया जाता है। इस

ताल के सौंदर्य के लिए बीच–बीच में नर्तक शबा–शे–बला हो शबा नाटी शब्दों का प्रयोग सामूहिक रूप में करते है। जिससे ढोल वादक इस ताल को और भी आकर्षक ढंग से बजाता है। यह राग खेमटा ताल के समकक्ष है। इस ताल की लिपि इस प्रकार है–

1	2	3	4	5	6	7	8
तां	–तां	घिण	घिण	तां	–घिता	घिण	घिण
x				0			

दूसरा प्रकार

1	2	3	4	5	6	7	8
चण	चण	घिण	चण	घिण	चण	घ्णीं	ऽऽ
x				0			

ञाह ताल

पांगी क्षेत्र को धार्मिक अनुष्ठानों पर बौद्ध बिहारों में इस ताल का प्रयोग किया जाता हैं यह ताल सात मात्रा गिनती है। बौद्ध वाद्य यंत्र बुग्जल (रेल्मों) तथा ञाह पर बजाई जाती है। ञाह वाद्य से इसे ञाह ताल कहते हैं।

1	2	3	4	5	6	7	8
धीं–	धीं–	धीं–	धी–	टां	टां	टां	टां
X				0			

दूसरा प्रकार

यह ताल बुगजल, ऐब गयलिंग में दर्शाए जाते हैं। लामाओं द्वारा किए जाने वाले छम नृत्य एवं पूजा पाठ में वादकों द्वारा यह ताल सामूहिक रूप से बजाई जाती हैं।

1	2	3	4	5	6	7	8
धीं	किटा	धीं	किटा	धीं	किटा	धीं	धीं
x				0			

बसन्त ताल

पांगी क्षेत्र के पारम्परिक लोक संगीत में देव स्थलों में प्रचलित ताल जो देवता के कारदारों द्वारा बजाया जाता है। मेले के शुभ आरम्भ में 'ठाठडी' कारदार के घर से पूजा स्थल तक बजाया जाता हैं विशेषकर इस राग को मेले के आगज से लोकप्रियता प्राप्त है। लय के प्रवाह को बढ़ाने के लिए ''ढोंस'' वाद्य के साथ ''नगार'' का प्रयोग किया जाता है। बांसुरी की विशेष धुनों के साथ समूह में ढोल वादक एवं ग्रामीण लोग जयकार लगाते हुए मन्दिर स्थल तक पहुंचते हैं। मुख्यतः इस ताल को देव–संगीत के सिवाय अन्य लोक नृत्य एवं लोकगीतों के साथ प्रयोग नहीं किया जाता है। अतः बसंत ताल की तालिपि इस प्रकार है –

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
टां	टां	धिं–	तण	धिं	तण	धिं–	धिं–	तण	तण	धिं–	तण	त्रण	घिण्ता	धिं–	धिं–
x															

सल्याई तालः (शिव ताल)

बसन्त ताल के पश्चात मन्दिर प्रांगण में पहुंचने पर बजने वाली ताल को शिव ताल या सल्याई ताल कहते है। इसमें माता के सभी कारदार अपने–अपने यंत्रों को पकड़ कर मध्यलय में चलते रहते है। ढोल वादक तथा बांसुरी वादक सौंदर्य के लिए करनाल, घण्टा, छंछाल, रणसिंगा, निशाणी(काहल) का प्रयोग करते है। स्थानीय भाषा में लोग इस ताल को दो नामों से अभीहीत सल्याई एवं शिव ताल कहते हैं। इस ताल की लिपि इस प्रकार है –

1	2	3	4	5	6
तंघि	न	घिं–घिं–	घिंघिं	न	घिं–
x			0		

शेन नृत्य ताल

लोक नृत्य तालों में शेन नृत्य ताल का अपना विशिष्ट स्थान है। चम्बा जिले के पांगी क्षेत्र में समय समय पर देव–त्योहारों एवं मेलों का आयोजन किया जाता है। इन मेलों एवं त्योहारों में विभिन्न लोक वाद्यों पर देव–पूजा तथा देव नृत्यों पर लोक तालें बजाई जाती है। जिनमें शेन नृत्य ताल का स्थान सर्वोपरि है इस अवसर पर बांसुरी के साथ छंछाल, रणसिंगा, करनाल, काहल आदि फूंक वाले वाद्यों के साथ नगार, ढोंस आदि वाद्यों पर यह ताल विलम्बित लय में बजाया जाता है।

शेन नृत्य ताल की लिपि दो प्रकार से बताई जा रही है। प्रथम प्रकार में इस ताल की 8 मात्रा, भाग दो है तथा दूसरे प्रकार में इसकी मात्रा 14 भाग 4

प्रथम प्रकार की ताल लिपि इस प्रकार है–

1	2	3	4	5	6	7	8
टांटां	घिता	घिता	गिड़गिड़	गिड़गिड़	घिता	घिता	गिड़गिड़
x				0			

दूसरे प्रकार की ताल लिपि–

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
तां	तं	झिता	तं	घिता	घिण	घिण	घिण	घिण	धिता	तण	घिता	घिण	घिण
x			2				3			4			

वर्तण ताल

यह प्राचीन ताल है। क्षेत्रीय लोक कलाकारों द्वारा मन्दिरों में बजाया जाता है। मेले के सुअवसर पर देव–स्तुति में इस ताल को बजाया जात हैं ऐरशींत, ठाठडी–जागडी एवं माहल इस नृत्य में भाग लेते है। जो हाथों में चांदी एवं लोहे के यंत्र शस्त्र लिये नृत्य में सीमित होते है। जागडी के सिर पर बड़ी लकड़ी का बना हुआ बेलना कार यंत्र जिसे ''पहडुआ' कहते हैं 'जागड़ी' छुब एवं त्रिशुल हाथ में ताल के साथ छुमाता है और नृत्य करते हुए पूरे मन्दिर प्रांगण की परिक्रमा करता है। 'ऐरशींत' का अनुसरण करते हुए सभी नृत्य करने लगते है। इस नृत्य में जिस ताल को बजाया जाता है स्थानीय लोकभाषा में ''वर्तण'' ताल कहते है। इस ताल का वादन सीधा किया जाता हैं तिहाईयों का स्थान गौण है। लयकारियों का प्रयोग ताल सौन्दर्य के लिए किया जाता हैं बांसुरी की गुंजायमान सुरीली धुनों पर ढोल वादक इस ताल का वादन करते हैं तो वातावरण मनमोहक बन जाता हैं। बांसुरी वादक मध्यलय के गीत बजाकर नृत्य करते रहते हैं। यह ताल एक मात्रा की मानी जाती है। इस ताल की लिपि इस प्रकार है –

1	2	3	4	5	6
झां	झिण	तां	गिणी	झिण	तां
x			0		

नाटी ताल

वर्तण ताल की लड़ी में नाटी ताल आकर्षक ताल हैं यह ताल देवी प्रकट के लिए ही नहीं बल्कि न्य शुभ अवसरों पर इसका वादन किया जाता है। इस ताल को आरम्भ काफी द्रुत लय में बजाया जाता है। इसमें जब चार पांच ढोल वादक मिलकर बांसुरी की धुन पर वादन करते हैं। बांसुरी वादक तरह तरह के घुरैई के साथ बजने वाली तालों में मुख्यतः आठ मात्रिक एवं छः मात्रिक तालों का प्रयोग किया जाता है। जिनके लिए पांगी क्षेत्र में कोई नाम नहीं दिया गया हैं लेकिन लोक गायक एवं लोक वादक गायन के आधार पर वादन करते है। कभी–कभी विलम्बित मध्य एवं द्रुत लय में ढोल वाद्य पर बजाया जाता है। घुरैई गायन शैली में कहरवा प्रचलन वाली ताल –

1	2	3	4	5	6	7	8
तं	तं	घि	–ता	तं	–घिता	घिण	घिण
x				0			

प्रयोहाती ताल

भ्यागेण गायन शैली के साथ बजने वाली इस ताल को धार्मिक अनुष्ठानों एवं प्रातः कालीन समय में बजाया जाता हैं घाटी में प्रत्येक शुभ एवं मंगलिक कार्य क्रमों में इस ताल के साथ आगज किया जाता है इस राग को बजाने का समय सुबह 4:00 बजे से लेकर 7:00 बजे तक का माना गया हैं। इस समय पंगवाल जन स्थानीय देवी–देवताओं, राम–सीता, कृष्ण लीलाओं तथा प्रातः कालीन सास बहु के लोकगीतों के साथ इस ताल को बड़े आकार की ढोल पर बजाते हैं। बांसुरी एवं शंख की धुन

पर पूरा वातावरण उस समय संगीतमयी हो उठता हैं कई जगह खंजरी एवं रूबाने का उपयोग भी किया जाता है। इसे दो तरह से भ्यागेण गायन में प्रयोग किया जाता है। इस ताल की लिपि इस प्रकार है।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
धीं	धी	न	धीं	–	तां	तं	धीं	तं	ना	धीं	–	धीं	–
x			2				0			3			

इसका दूसरा प्रकार खेमटा प्रकार की ताल के समान है।

1	2	3	4	5	6
तां	तां	कड़तां	तां	कड़तां	धिन
X			0		

लोक गीतों के साथ बजने वाली ताल, जो लाहौल एवं पांगी क्षेत्र के कुछ गीतों के साथ बजती है। यह ताल छः मात्रा की ताल है। यह शास्त्रीय दादरा समान बिल्कुल भी नहीं बजती इसको बजाने का ढंग स्थानीय क्षेत्र में इस प्रकार है –

1	2	3	4	5	6
तां	ता	क	त	धां	धां
X			0		

निष्कर्ष

अतः निष्कार्ष के आधार पर कहा जात सकता है कि जहां चम्बा जिले के पांगी क्षेत्र लोक संस्कृति में पीछे नहीं है वहीं लोक संगीत के क्षेत्र में लोक गीतों के साथ बजने वाले ताल वाद्यों की तालें शास्त्रीय तालों से भिन्न है। जिन्हें क्षेत्रीय राग एवं ताल कह कर पुकारा जाता है। इस क्षेत्र में प्रत्येक गांव में अपने–अपने कुलिष्ठ देवी देवताओं के मन्दिर है। जिनकी पूजा पारम्परिक रिति रिवाजों से की जाती है। मन्दिरों एवं लोक गीतों के साथ क्षेत्रीय तालों का ही वादन किया जात है। देव स्थलों में प्रयुक्त तालों में लय एवं भरी प्रयोग होता है। जो शास्त्रीय तालों के समान काल या खाली के उचित स्थान पर निर्वाह करना स्थानीय वादकों के लिए सम्भव नहीं है। क्योंकि इस लय वाद्य वादक है जिन्हें अक्षर ज्ञान है और न ही ताल के बोल कण्ठस्थ है। जैसे धा ना धिं तिरकिट सदृश बोलों की कल्पना करना उनमें नहीं है। किन्तु अपना वाद्य विविध लयों में अत्यन्त श्रेष्ठ रीति से बजा लेते हैं। ताल, काल, खाली, भरी आदि शास्त्रीय शब्द उनके लिए निरर्थक होते हैं। पांगी क्षेत्र में ताल वादन की अपनी एक अलग विशेषता है। वादन सामूहिक रूप में किया जाता है। गर्दन हिलाकर हाथ से संकेत के रूप में ताल के सम पर वादक कलाकार साथ मिलकर कलाकार की कला प्रदर्शन पर दाद देते हैं। ये दुर्लभ तालें एक अमूल्य निधि है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

रूप शर्मा, अन्धकार से प्रकाश की ओर, किरण प्रकाशन, मण्डी, हि.प्र. 2006
गर्ग, नन्द लाल, हिमाचल के प्राचीनतम संगीत वाद्य, संगीत नाटक अकादमी, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
रणपतिया, अमर सिंह पांगी, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी।

साक्षात्कार

कर्म लाल, गांव व डा., मिन्धल, तै. पांगी, जिला चम्बा हिमाचल प्रदेश।
हीरा नन्द, गांव व डा., मिन्धल, तै. पांगी, जिला चम्बा हिमाचल प्रदेश।
गरीब दास, गांव पुर्थी, डाघर थांदल, तहसील पांगी, जिला चम्बा हिमाचल प्रदेश।
मान चन्द (चाड़) गांव व डा. कुमार, तहसील पांगी, जिला चम्बा।
विद्यानन्द, गांव चस्क, डाकघर सेचू, तहसील पांगी, जिला चम्बा।

Pratibha Spandan